

श्रीमीनाक्ष्यष्टकम्

Shri Minakshi Ashtakam

[sanskritdocuments.org](http://sanskritdocuments.org)

November 19, 2018

---

# Shri Minakshi Ashtakam

---

## श्रीमीनाक्ष्यष्टकम्

---

### Sanskrit Document Information



---

Text title : Minakshi Ashtakam

File name : mInAkShyaShTakam.itx

Category : devii, aShTaka

Location : doc\_devii

Author : Rajapujitha Sri Kulandayananda Swamigal

Transliterated by : G. Vasanth gsathyarumugam at gmail.com

Proofread by : PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

Latest update : November 19, 2018

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

November 19, 2018

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीमीनाक्ष्यष्टकम्



श्रीमीनाक्ष्यष्टकम् ॥

माधुर्यं महिमे महागिरिसुते मल्लादि संहारिणि  
मूलाधारकृते महामरकते शोभे महासुन्दरि ।  
मातङ्गि महिमे महासुरवधे मन्त्रोत्तमे माधवि  
मीनाक्षि मधुराम्बिके महिमये मां पाहि मीनाम्बिके ॥ १ ॥

नानारत्नविभूषणे नवगणे शोभे महासुन्तरि  
नित्यानन्दवरे निरूपणगुणे निम्नोन्नते पङ्कजे ।  
नाट्ये नाटकवेषधारिणि शिवे नादे कालनर्तकि(?)  
मीनाक्षि मधुराम्बिके महिमये मां पाहि मीनाम्बिके ॥ २ ॥

कामक्रोधनिवारणे करुणालये कात्यायनि सन्मते  
कारुण्याकृतिके किरातवरदे कं गं क बीजाङ्कुरे ।  
कामार्थं तव सिद्धिहेतुकमिदं भक्त्या भवत्सन्निधौ  
मीनाक्षि मधुराम्बिके महिमये मां पाहि मीनाम्बिके ॥ ३ ॥

षड्क्रान्तगते षडाननवरे षड्वीजरक्षाङ्कुरे  
षोडाधारकले षडक्षरि शिवे क्षोणी महाक्षीयते ।  
क्षन्तव्यं जननि क्षमा रम शिवे क्षीराब्धि मध्यान्तरे  
मीनाक्षि मधुराम्बिके महिमये मां पाहि मीनाम्बिके ॥ ४ ॥

वामे नीलदलाक्षि पुष्परसिके बाले महाकुङ्कुमे  
अन्ये पाणिवराजभक्तजननि नित्यं परश्रेयसि ।  
बाले बन्धुवराङ्गिणि बहुविधे भूचक्रसञ्चारिणि  
मीनाक्षि मधुराम्बिके महिमये मां पाहि मीनाम्बिके ॥ ५ ॥

रागस्तोत्रविचारवेदविभवे रम्ये रतोल्लासिनि  
राजीवेक्षणि राज राङ्गणरणे राजाधिराजेश्वरि ।

राज्ञि राजससत्त्वतामसगुणे राधे रमासोदरि  
मीनाक्षि मधुराम्बिके महिमये मां पाहि मीनाम्बिके ॥ ६ ॥

सारास्ये सरसीरुहस्य जननि साम्राज्यदानेक्षणि  
साम्यासाम्य चाष्टकलासुखवने सान्दीपनीसेविते ।  
सत्यानन्दसुधे च सुन्दरफले स्वाधिष्ठचक्रान्तरे  
मीनाक्षि मधुराम्बिके महिमये मां पाहि मीनाम्बिके ॥ ७ ॥

कर्पूरारुणकुङ्कुमार्चितपदे क्षीराब्धिशोभे शिवे  
गायत्रि करुणाकटाक्षविनुते कन्दर्पकान्तिप्रदे ।  
कल्याणाष्टसुरार्चिते सुकविते कारुण्यवारान्निधे  
मीनाक्षि मधुराम्बिके महिमये मां पाहि मीनाम्बिके ॥ ८ ॥

इति राजपूजित श्रीकुलन्तयानन्द(बालानन्द)स्वामिना विरचितं  
श्रीमीनाक्षयष्टकं सम्पूर्णम् ।

Encoded by G. Vasanth gsathyaarumugam at gmail.com

Proofread by PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

---

—  
*Shri Minakshi Ashtakam*

pdf was typeset on November 19, 2018

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

